M.A Sem-2

Cc-06

पश्चिमी ज्ञानमीमांसा में अनुभववाद (Empiricism)

प्रस्तावना

पश्चिमी दर्शन में ज्ञानमीमांसा (Epistemology) वह शाखा है जो ज्ञान की प्रकृति, स्रोत, सीमा और वैधता का अध्ययन करती है। "हम क्या जानते हैं?", "हम कैसे जानते हैं?", और "क्या निश्चित ज्ञान संभव है?" जैसे प्रश्न ज्ञानमीमांसा के मूल प्रश्न हैं। पश्चिमी ज्ञानमीमांसा में दो प्रमुख परंपराएँ रही हैं—तर्कवाद (Rationalism)और अनुभववाद (Empiricism)। अनुभववाद वह विचारधारा है जिसके अनुसार ज्ञान का प्रमुख स्रोत अनुभव है, विशेषतः इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त अनुभव।

अनुभववाद की परिभाषा

अनुभववाद (Empiricism) वह सिद्धांत है जिसके अनुसार मनुष्य का समस्त ज्ञान इंद्रियानुभव (sensory experience) से उत्पन्न होता है। मन जन्म के समय एक कोरी पट्टी (Tabula Rasa) के समान होता है और अनुभव के माध्यम से उसमें विचारों और ज्ञान का विकास होता है।

अनुभववाद तर्कवाद के विपरीत है, जो मानता है कि कुछ ज्ञान जन्मजात (innate) होता है और बुद्धि के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

अनुभववाद का विकास मुख्यतः 17वीं और 18वीं शताब्दी में इंग्लैंड में हुआ। इस परंपरा के तीन प्रमुख दार्शनिक हैं:

1. John Locke

2. George Berkeley

3. David Hume

इन तीनों को “ब्रिटिश अनुभववादी” कहा जाता है।

जॉन लॉक का अनुभववाद

John Locke को अनुभववाद का जनक माना जाता है। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक An Essay Concerning Human Understanding में उन्होंने ज्ञान की उत्पत्ति पर विस्तार से चर्चा की।

लॉक के मुख्य विचार:

* मन जन्म के समय Tabula Rasa(कोरी पट्टी) है।
* सभी विचार अनुभव से उत्पन्न होते हैं।
* अनुभव दो प्रकार का होता है:

1. संवेदन (Sensation) – बाहरी वस्तुओं से प्राप्त अनुभव।
2. प्रतिबिंब (Reflection) – मन की आंतरिक क्रियाओं का अनुभव।

लॉक के अनुसार, जटिल विचार सरल विचारों के संयोजन से बनते हैं।

जॉर्ज बर्कले का अनुभववाद

George Berkeley ने लॉक के विचारों को आगे बढ़ाया, परंतु उन्होंने भौतिक पदार्थ के अस्तित्व को ही नकार दिया।

उनका प्रसिद्ध सिद्धांत था: “Esse est percipi” (अस्तित्व का अर्थ है—प्रत्यक्षित होना)।

अर्थात, कोई वस्तु तभी अस्तित्व में है जब उसे अनुभव किया जा रहा हो।

उनकी प्रमुख कृति है:

A Treatise Concerning the Principles of Human Knowledge

बर्कले के अनुसार, भौतिक वस्तुएँ स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में नहीं हैं; वे केवल विचारों का समूह हैं जिन्हें हम अनुभव करते हैं।

डेविड ह्यूम का अनुभववाद

David Hume अनुभववाद को अपने चरम तक ले गए।

उनकी प्रसिद्ध कृति है:

A Treatise of Human Nature

ह्यूम के मुख्य विचार:

* ज्ञान दो प्रकार का है:

1. Impressions (प्रभाव) – तीव्र और प्रत्यक्ष अनुभव
2. Ideas (विचार) – प्रभावों की प्रतिलिपि

* कारण-कार्य (Cause and Effect) का संबंध भी अनुभव पर आधारित आदत है, न कि कोई आवश्यक सत्य।

* आत्मा (Self) कोई स्थायी सत्ता नहीं, बल्कि अनुभवों का समूह है।

ह्यूम के संशयवाद (Skepticism) ने पश्चिमी दर्शन को गहराई से प्रभावित किया।

अनुभववाद की विशेषताएँ

1. ज्ञान का स्रोत अनुभव है
2. इंद्रियों की प्रधानता
3. वैज्ञानिक पद्धति का समर्थन
4. जन्मजात विचारों का निषेध
5. प्रयोग और अवलोकन पर जोर

अनुभववाद ने आधुनिक विज्ञान की पद्धति को दार्शनिक आधार प्रदान किया।

अनुभववाद और विज्ञान

अनुभववाद ने वैज्ञानिक क्रांति को बल दिया। प्रयोग, अवलोकन और परीक्षण के माध्यम से सत्य की खोज का विचार अनुभववाद से जुड़ा है। आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति इसी सिद्धांत पर आधारित है।

अनुभववाद की आलोचना

1. केवल अनुभव पर्याप्त नहीं – तर्कवादियों का मत है कि गणित और नैतिकता जैसे विषय केवल अनुभव से सिद्ध नहीं होते।
2. इंद्रियाँ भ्रमित कर सकती हैं– अनुभव हमेशा विश्वसनीय नहीं होता।
3. सार्वभौमिक सत्य की समस्या – अनुभव सीमित और व्यक्तिगत होता है।

निष्कर्ष

पश्चिमी ज्ञानमीमांसा में अनुभववाद का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। लॉक, बर्कले और ह्यूम ने ज्ञान के स्रोत के रूप में अनुभव को केंद्र में रखा। अनुभववाद ने आधुनिक विज्ञान, मनोविज्ञान और सामाजिक विज्ञानों को गहराई से प्रभावित किया।

हालाँकि इसकी सीमाएँ भी हैं, परंतु यह दर्शन की एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली धारा है जिसने ज्ञान की प्रकृति पर गहन विमर्श को जन्म दिया।

इस प्रकार, पश्चिमी ज्ञानमीमांसा में अनुभववाद एक ऐसी विचारधारा है जिसने यह स्थापित किया कि ज्ञान का वास्तविक आधार अनुभव है, न कि केवल तर्क या जन्मजात विचार।